छत्तीसगढ़ विधान सभा

की अशोधित कार्यवाही



(अधिकृत विवरण)



पंचम विधान सभा पंचदश सत्र

गुरुवार, दिनांक 01 दिसम्बर, 2022 (अग्रहायण 10, शक सम्वत् 1944)

[अंक 01]

विधान सभा के पदाधिकारी

अध्यक्ष डॉ. चरणदास महंत

सचिव श्री दिनेश शर्मा

सभापति तालिका

- 1. श्री सत्यनारायण शर्मा,
- 2. श्री धनेन्द्र साहू,
- 3. श्री देवेन्द्र बहादुर सिंह,
- 4. श्री शिवरतन शर्मा,
- 5. श्री लखेश्वर बघेल.

माननीय राज्यपाल

सुश्री अनुसुईया उइके

मंत्रिमण्डल के सदस्यों की सूची

01.	श्री भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री	सामान्य प्रशासन, वित्त, ऊर्जा, खनिज साधन, जन सम्पर्क, इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी एवं अन्य विभाग जो किसी मंत्री को आवंटित ना हो.
02.	श्री टी.एस. सिंहदेव, मंत्री	लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, चिकित्सा शिक्षा, 20 सूत्रीय कार्यान्वयन, वाणिज्यिक कर (जी.एस.टी.)
03.	श्री तामध्वज साह्, मंत्री	लोक निर्माण, गृह, जेल, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, पर्यटन
04.	श्री रविन्द्र चौबे, मंत्री	संसदीय कार्य, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, कृषि विकास एवं
		किसान कल्याण तथा जैव प्रौद्योगिकी, पश्धन विकास, मछली
		पालन, जल संसाधन एवं आयाकट
05.	डॉ.प्रेमसाय सिंह टेकाम, मंत्री	स्कूल शिक्षा, आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास,
		पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास, सहकारिता
06.	श्री मोहम्मद अकबर, मंत्री	परिवहन, आवास एवं पर्यावरण, वन, विधि एवं विधायी कार्य
07.	श्री कवासी लखमा, मंत्री	वाणिज्यिक कर (आबकारी), वाणिज्य एवं उद्योग
08.	डॉ.शिवकुमार डहरिया, मंत्री	नगरीय प्रशासन एवं विकास, श्रम
09.	श्री अमरजीत भगत, मंत्री	खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण, योजना
		आर्थिक एवं सांख्यिकी, संस्कृति
10.	श्रीमती अनिला भेंडिया, मंत्री	महिला एवं बाल विकास एवं समाज कल्याण
11.	श्री जयसिंह अग्रवाल, मंत्री	राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, पुनर्वास,वाणिज्यिक कर
		(पंजीयन एवं मुद्रांक)
12.	श्री गुरू रूद्र कुमार, मंत्री	लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी एवं ग्रामोद्योग
13.	श्री उमेश पटेल, मंत्री	उच्च शिक्षा, कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार,
		विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण

संसदीय सचिवों की सूची

- 01. श्री चिंतामणी महाराज
- 02. श्री पारसनाथ राजवाड़े
- 03. श्रीमती अंबिका सिंहदेव
- 04. श्री चन्द्रदेव प्रसाद राय
- 05. श्री द्वारिकाधीश यादव
- 06. श्री गुरुदयाल सिंह बंजारे
- 07. श्री इन्द्रशाह मण्डावी
- 08. श्री कुंवर सिंह निषाद
- 09. डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह
- 10. श्री रेखचंद जैन
- 11. सुश्री शकुन्तला साहू
- 12. श्री शिशुपाल सोरी
- 13. श्री यू.डी. मिंज
- 14. श्री विकास उपाध्याय
- 15. श्री विनोद सेवन लाल चन्द्राकर

सदस्यों की वर्णात्मक सूची (निर्वाचन क्षेत्र का नाम तथा क्रमांक सहित)

		3T	
01.	अजय चन्द्राकर	31	57-क्रूद
	अमरजीत भगत		11-सीताप्र (अ.ज.जा.)
	अरूण वोरा		64-दुर्ग शहर
	अनिता योगेंद्र शर्मा, श्रीमती		47-धरसींवा
05.	अनिला भेंडिया, श्रीमती		60-डौंडी लोहारा (अ.ज.जा.)
06.	अंबिका सिंहदेव, श्रीमती		03-बैकुंठपुर
07.	अमितेश शुक्ल		54-राजिम
08.	अनूप नाग		79-अंतागढ़ (अ.ज.जा.)
09.	 आशीष कुमार छाबड़ा		69-बेमेतरा
	<u> </u>		
		इ	
01.	इंद्रशाह मण्डावी		78-मोहला-मानपुर (अ.ज.जा.)
02.	इंदू बंजारे, श्रीमती		38-पामगढ़ (अ.जा.)
		3	
01.	उत्तरी गनपत जांगड़े, श्रीमती		17-सारंगढ़ (अ.जा.)
02.	उमेश पटेल		18-खरसिया
	_	क	
	कवासी लखमा		90-कोन्टा (अ.ज.जा.)
	कृष्णमूर्ति बांधी, डॉ.		32-मस्तूरी (अ.जा.)
03.	किस्मत लाल नंद		39-सरायपाली (अ.जा.)
04.	कुलदीप जुनेजा		50-रायपुर नगर उत्तर
05.	कुंवर सिंह निषाद		61-गुण्डरदेही
06.	के.के.धुव, डॉ.		24-मरवाही (अ.ज.जा.)
07.	केशव प्रसाद चन्द्रा		37-जैजेपुर
		ख	
01	खेलसाय सिंह		04-प्रेमनगर

		ग	
01.	गुरू रूद्र कुमार		67-अहिवारा (अ.जा.)
02.	गुरूदयाल सिंह बंजारे		70-नवागढ़ (अ.जा.)
03.	गुलाब कमरो		01-भरतपुर-सोनहत (अ.ज.जा.)
		च	
	चक्रधर सिंह सिदार		15-लैलूंगा (अ.ज.जा.)
	चरणदास महंत, डॉ.		35-सक्ती
	चंदन कश्यप		84-नारायणपुर (अ.ज.जा.)
	चंद्रदेव प्रसाद राय		43-बिलाईगढ़ (अ.जा.)
05.	चिन्तामणी महाराज		08-सामरी (अ.ज.जा.)
		_	
0.1		छ	77
01.	छन्नी चंदू साहू, श्रीमती		77-खुज्जी
		ज	
01	जयसिंह अग्रवाल	OI .	21-कोरबा
01.	or make or waren		21 1/1(4)
		ट	
01.	टी.एस.सिंहदेव		10-अम्बिकाप्र
			J
		ਤ	
01.	डमरूधर पुजारी		55-बिन्द्रानवागढ़ (अ.ज.जा.)
		त	
01.	तामध्वज साहू		63-दुर्ग ग्रामीण
	V -	द	× ·
01.	दलेश्वर साहू		76-डोंगरगांव
02.	द्वारिकाधीश यादव		41-खल्लारी
03.			88-दंतेवाड़ा (अ.ज.जा.)
	देवेंद्र यादव		65-भिलाई नगर
05.	देवेंद्र बहादुर सिंह		40-बसना

		ध	
01.	धरमलाल कौशिक		29-बिल्हा
02.	धनेन्द्र साहू		53-अभनपुर
03.	धर्मजीत सिंह		26-लोरमी
		न	
01.	ननकीराम कंवर		20-रामपुर (अ.ज.जा.)
02.	नारायण चंदेल		34-जांजगीर-चांपा
		प	
01.	प्रकाश शक्राजीत नायक		16-रायगढ़
02.	प्रमोद कुमार शर्मा		45-बलौदाबाजार
03.	पारसनाथ राजवाड़े		05- भटगांव
04.	प्रीतम राम, डा.		09-लुण्ड्रा (अ.ज.जा.)
05.	पुन्नूलाल मोहले		27-मुंगेली (अ.जा.)
06.	पुरूषोत्तम कंवर		22-कटघोरा
07.	प्रेमसाय सिंह टेकाम, डॉ.		०६-प्रतापपुर (अ.ज.जा.)
		ब	_
	बृजमोहन अग्रवाल		51-रायपुर नगर(दक्षिण)
02.	बृहस्पत सिंह		07-रामानुजगंज (अ.ज.जा.)
0.4		भ	74-5
	भुनेश्वर शोभाराम बघेल		74-डोंगरगढ़ (अ.जा.)
02.	भूपेश बघेल		62-पाटन
		म	
01.	ममता चंद्राकर, श्रीमती	¥1	71-पण्डरिया
02.	मोहन मरकाम		83-कोण्डागांव (अ.ज.जा.)
03.	मोहित राम		23-पाली-तानाखार(अ.ज.जा.)
03.	मोहम्मद अकबर		72-कवर्धा
55.	THUS THE STANK		/ Z 7/4 41

		य	
01.	यशोदा नीलाम्बर वर्मा, श्रीमती		73-खैरागढ़
02.	यू.डी.मिंज		13-क्नक्री (अ.ज.जा.)
			3 3 \ '
		₹	
01.	रजनीश कुमार सिंह		31-बेलतरा
02.	रंजना डीपेंद्र साहू, श्रीमती		58-धमतरी
03.	राजमन वेंजाम		87-चित्रकोट (अ.ज.जा.)
04.	रमन सिंह, डॉ.		75-राजनांदगांव
05.	रामकुमार यादव		36-चंद्रपुर
06.	रामपुकार सिंह ठाकुर		14-पत्थलगांव (अ.ज.जा.)
07.	रविन्द्र चौबे		68-साजा
08.	रश्मि आशिष सिंह, डॉ. (श्रीमती)		28-तखतपुर
09.	रेखचंद जैन		86-जगदलपुर
10.	रेणु अजीत जोगी, डॉ. (श्रीमती)		25-कोटा
		ल	
01.	लक्ष्मी धुव, डॉ.		56-सिहावा (अ.ज.जा.)
02.	लखेश्वर बघेल		85-बस्तर (अ.ज.जा.)
03.	लालजीत सिंह राठिया		19-धरमजयगढ़ (अ.ज.जा.)
		व	
01.	विक्रम मण्डावी		89-बीजापुर (अ.ज.जा.)
02.	विनय जायसवाल, डॉ.		02-मनेन्द्रगढ़
03.	विनय कुमार भगत		12-जशपुर (अ.ज.जा.)
04.	विद्यारतन भसीन		66-वैशाली नगर
05.	विकास उपाध्याय		49-रायपुर नगर पश्चिम
06.	विनोद सेवन लाल चंद्राकर		42-महासमुन्द
		0.7	
01	शक्तन्त्रता गाट गशी	श	४४ स्परीत
01.	शकुन्तला साह्, सुश्री		44-कसडोल
02.	शिवरतन शर्मा		46-भाटापारा
03.	शिवकुमार डहरिया, डॉ.		52-आरंग (अ.जा.)

viii

04.	शिशुपाल सोरी		81-कांकेर (अ.ज.जा.)
05.	शैलेश पाण्डे		30-बिलासपुर
		स	
01.	सत्यनारायण शर्मा		48-रायपुर ग्रामीण
02.	संतराम नेताम		82-केशकाल (अ.ज.जा.)
03.	संगीता सिन्हा, श्रीमती		59-संजारी बालोद
04.	सौरभ सिंह		33-अकलतरा

80-भानुप्रतापपुर (अ.ज.जा.)	रिक्त
----------------------------	-------

छत्तीसगढ़ विधान सभा

गुरूवार, दिनांक 01 दिसम्बर, 2022
(अग्रहायण-10, शक संवत् 1944)
विधान सभा पूर्वाहन 11:00 बजे समवेत हुई
(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

समय :

11:00 बजे

राष्ट्रगीत/राज्यगीत

अध्यक्ष महोदय :- अब राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" के साथ राज्यगीत "अरपा पड़री के धार" होगा । माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे राष्ट्रगीत एवं राज्यगीत के लिये कृपया अपने स्थान पर खड़े हों ।

(राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" और राज्यगीत "अरपा पहरी के धार" का गायन किया गया)

समय :

11:03 बजे

निधन का उल्लेख

- (1) श्री मनोज सिंह मंडावी, उपाध्यक्ष, छत्तीसगढ़ विधान सभा ।
- (2) श्री दीपक पटेल, छत्तीसगढ़ विधान सभा के पूर्व सदस्य ।

अध्यक्ष महोदय :- मुझे सदन को सूचित करते हुए अत्यंत दुख हो रहा है कि छत्तीसगढ की पंचम विधान सभा के सदस्य एवं विधान सभा के उपाध्यक्ष, श्री मनोज सिंह मंडावी का दिनांक 16 अक्टूबर, 2022 तथा छत्तीसगढ़ विधान सभा के पूर्व सदस्य, श्री दीपक पटेल का दिनांक 25 अक्टूबर, 2022 को निधन हो गया है।

श्री मनोज सिंह मंडावी का जन्म 10 अप्रैल, 1964 को ग्राम-नाथिया नवागांव, जिला-उत्तर बस्तर कांकेर में हुआ था। श्री मनोज सिंह मंडावी जी ने एम.ए., एल.एल.बी. तक की शिक्षा प्राप्त की थी। छात्र जीवन से ही वे राजनीति एवं सामाजिक कार्य में सिक्रय रहे। प्रथम बार सन् 1998 में अविभाजित मध्य प्रदेश विधान सभा में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की टिकट पर भानुप्रतापपुर विधान सभा क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुए। वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य गठन उपरांत छत्तीसगढ़ की प्रथम विधान सभा के सदस्य रहे तथा उन्होंने नवगठित छत्तीसगढ़ सरकार में गृह, जेल परिवहन, लोकनिर्माण, नगरीय प्रशासन, विधि विधायी कार्य, आवास तथा विमानन विभागों के राज्य मंत्री पद का दायित्व संभाला।

पश्चात् सन् 2013 तथा 2018 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के टिकट पर भानुप्रतापपुर निर्वाचन क्षेत्र से ही छत्तीसगढ़ की विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । वे छत्तीसगढ़ विधान सभा में प्राक्कलन समिति के सभापित तथा विभिन्न समितियों के सदस्य रहे । वर्तमान में वे छत्तीसगढ़ विधान सभा में उपाध्यक्ष पद का महत्वपूर्ण दायित्व संभाल रहे थे । वे आदिवासी समाज की समस्याओं के निराकरण, उनके हितों के संरक्षण तथा विकास के लिये सदैव अग्रसर रहे । उनकी समाजसेवा, खेल एवं संगीत में विशेष अभिरूचि थी ।

उनके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ, आदिवासी जननेता तथा समाजसेवी को खो दिया है।

श्री दीपक पटेल का जन्म 23 अक्टूबर, 1968 को चिरमिरी में हुआ था । वे प्रारंभ से ही राजनीति में सिक्रय रहे । 2008 में निर्वाचन क्षेत्र मनेन्द्रगढ़ से भारतीय जनता पार्टी की टिकिट पर छत्तीसगढ़ की तृतीय विधान सभा के सदस्य चुने गए । वे छत्तीसगढ़ विधान सभा की पुस्तकालय सिमिति, शासकीय आश्वासनों संबंधी सिमिति तथा विशेषाधिकार सिमिति के सभापित तथा विधान सभा की विभिन्न सिमितियों के सदस्य रहे । अध्ययन एवं समाजसेवा में उनकी विशेष रूचि थी । उनके निधन से प्रदेश ने एक अन्भवी राजनीतिज्ञ एवं समाज सेवी को खो दिया है ।

म्ख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री मनोज मंडावी मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ की विधान सभा में सदस्य च्ने गए। उसके पहले वे छात्र राजनीति में सक्रिय थे। जब भी चर्चा होती थी तो वे छात्र राजनीति से अपनी चर्चा शुरू करते थे । खेलकूद में भी उनकी विशेष रूचि रही है । 1998 में वे प्रथम बार निर्वाचित हुए, छत्तीसगढ़ अलग राज्य बना तो फिर यहां बहुत सारे विभागों के मंत्री भी रहे । 2013 में निर्वाचित हुए एवं उसके बाद वर्तमान में वे विधान सभा उपाध्यक्ष के रूप में उन्होंने काम किया । मनोज मंडावी जी हमेशा बस्तर के विकास के लिए, क्षेत्र के विकास के लिए, आदिवासियों के हितों के लिए संघर्ष करते रहे । अनेक ऐसे अवसर आए जब वे आदिवासियों के हितों में मुखर होकर बोलते रहे । उनकी अपनी एक विशिष्ट शैली थी । उपाध्यक्ष के रूप में आपके साथ सहयोगी के रूप में भी उन्होंने काम किया । उस समय वे कहा करते थे उस आसंदी पर बैठकर मैं संचालन कर पाऊंगा या नहीं कर पाऊंगा, लेकिन एक ऐसा अवसर भी आया जब सत्र आहूत था और आप कोरोना से पीड़ित हो गए थे तो पूरा सत्र उन्होंने संचालित किया था और आपकी को उन्होंने पूरा किया । हमें लगता था कि सत्र कैसे चलेगा, लेकिन उन्होंने बह्त अच्छे से संचालित किया । वे बह्त ही सुलझे ह्ए इंसान थे, साथ ही वे धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति भी था, पूजा पाठ करते थे । अक्सर वे नगरी के महादेव मंदिर चले जाते थे, उन्होंने घर में भी बह्त बड़ा मंदिर बनाया । निथया नवागांव में उनका जन्म ह्आ था और घर में उन्होंने बह्त भव्य मंदिर का निर्माण कराया था । 7 दिन पहले ही म्रिया दरबार के बाद मेरा वहां आना हुआ था और उस समय भी उन्होंने कहा कि मंदिर चलते हैं । शाम हो चुकी थी और मिलेट मिशन

के मिल का लोकार्पण करना था, उद्घाटन करना था, उस समय मैं पहुंचा था, साथ में वे थे, अनिला भेंडिया जी भी थीं, शिशुपाल सोरी जी भी थे तो उन्होंने आग्रह किया कि मंदिर दर्शन करने जरूर आना । मैंने कहा कि जब भी अगली बार मैं यहां आउंगा तो जरूर मंदिर दर्शन करने जाऊंगा । लेकिन विधि के विधान के आगे हम सब नत् मस्तक हैं । उनके घर जाना तो हुआ लेकिन उनकी अंतिम यात्रा में जाना हुआ । एक बहुत ही होनहार थे, उनके बड़ी उम्मीदें थीं, उनकी उम्म बहुत अधिक नहीं थी लेकिन विधि के विधान के आगे हम सब नत् मस्तक हैं । हमने एक अच्छा साथी ही नहीं, एक अच्छा दोस्त भी खोया है । आदिवासियों के हित में बुलंद होने वाली आवाज़ अब सदन में सुनाई नहीं देगी और न ही क्षेत्र में उनकी आवाज़ सुनाई देगी । लेकिन उनके कार्य, उनका व्यक्तित्व, उनके विचार हमेशा जीवित रहेंगे ।

भाई दीपक पटेल विधान सभा के सदस्य रहे । बहुत ही मृदुभाषी, मिलनसार व्यक्ति थे । तृतीय विधान सभा में वे इस सदन के सदस्य थे । पिछले दिनों भेंट मुलाकात कार्यक्रम में हम लोग चिरमिरी गए थे । वहां उनसे मुलाकात हुई थी, उन्होंने स्वास्थ्य की परेशानी के बारे में बताया भी था । मैंने कहा भी था कि शासन से जो भी सहयोग हो सकता है, निश्चित रूप से हम लोग करेंगे । लेकिन बहुत ही अल्पायु में उनकी भी मृत्यु हुई । मैं दोनों सदस्यों को अपने दल की ओर से, सदन की ओर से श्रद्धासुमन अपित करता हूं, ओम शांति ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री नारायण चंदेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री मनोज सिंह मंडावी जी और श्री दीपक पटेल जी, आपने उनके निधन का उल्लेख किया। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उन्हें अपनी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। माननीय अध्यक्ष जी, मनोज मंडावी जी ने कुशलता से इस सदन का संचालन किया। वे अत्यंत मिलनसार, हसमुख और व्यावहारिक थे, जो एक राजनेता में गुण होना चाहिए, वे सारी चीजें उनमें समाहित थी। हम लोगों को वर्ष 2008 से 2013 के बीच में एक कमेटी में उनके साथ नार्थ ईस्ट जाने का मौका मिला था। सबसे मिलना-जुलना, सारे सदस्यों की चिंता करना, मैं समझता हूं कि यह उनके व्यक्तित्व की खूबी थी। वे निश्चित रूप से एक अच्छे राजनेता के रूप में जाने जाएंगे। हम उन्हें अत्यंत विनम्रता के साथ श्रद्धास्मन अर्पित करते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन के पूर्व सदस्य, भाई दीपक पटेल जी, जब हम सरगुजा के प्रवास में थे, उनके निधन के दो महीने पहले ही मैं उनको देखने गया था। वे बीमारी से ग्रस्त थे लेकिन जब वे वर्ष 2008 से 2013 के बीच में इस सदन के सदस्य थे, उन्हें उत्कृष्ट विधायक का भी पुरस्कार मिला था। हर विषय पर दीपक जी की गहरी पकड़ थी और सदन से लेकर सड़क तक वे हर समय आम आदमी की आवाज बनकर रहे। चिरमिरी मनेन्द्रगढ़ क्षेत्र कोयलांचल क्षेत्र है और उस कोयलांचल क्षेत्र में श्रमिकों की समस्या हो, मजदूरों की समस्या हो। आज चिरमिरी में जो जल आवर्धन योजना चल रही है, जिस समय डॉ. साहब मुख्यमंत्री थे, चिरमिरी के लोग प्यासे थे लेकिन दीपक जी ने राज्य सरकार की अनुशंसा से भारत सरकार से उसको स्वीकृत कराया था। जब भी कोई बात उस क्षेत्र की समस्या की होती

थी, बड़ी मुखरता के साथ, सजगता के साथ, भाई दीपक पटेल जी उसको उठाते थे। आज वे हमारे बीच में नहीं हैं। मनोज जी और दीपक जी, संभावनाओं से भरे हुए राजनेता थे। लोग भविष्य में देखते थे कि बहुत आगे जाएंगे। लेकिन नियती के सामने हम सब लोग नतमस्तक हैं। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से दोनों सदस्यों को श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं और इतना ही कहना चाहता हूं कि-

"बड़े सौख से सुन रहा था जमाना तुम्हें,

त्म्हीं सो गये, दास्तां कहते कहते।।"

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अत्यंत विनम्रता से श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

स्वास्थ्य मंत्री (श्री टी.एस. सिंहदेव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज सदन में निधन के उल्लेख में छोटे भाई मनोज मंडावी जी और जब मैं पहली बार विधायक चुना गया तो साथी विधायक दीपक पटेल जी भी थे, आज हम लोग दोनों सदस्यों को श्रद्धांजिल देने के लिए इस सदन में हैं। मनोज सिंह मंडावी से कई वर्षों का संबंध रहा। एक बोर्ड, दबंग समझौता नहीं करने वाला व्यक्ति, जनप्रतिनिधि जो अपने विचारों और बातों में अडिग सा रहता था और फिर भी सहजता से अपनी बातों को रखकर उन्हें आगे बढ़ाने में निरंतर हर संभव प्रयत्न करता रहता था। हमने अपने एक ऐसे साथी को असमय खो दिया। मैं सोच भी नहीं सकता था, जब सूचना आई कि ऐसा हो गया। यह कैसे हो गया! अचानक यह कैसे हो गया!

जैसा कि माननीय मुख्यमंत्री जी कह रहे थे कि चुनाव के पूर्व दौरों के समय जब मैं उनसे मिलने गया तो वह मुझे अपने पैतृक स्थान, अपने घर ले गये और चित्रये, बड़े भैय्या, वहां चित्रये, मैंने वहां पर मन्दिर बनवाया है। हम मन्दिर चलते हैं। मुझे अंदाज नहीं था कि उस मन्दिर का क्या स्वरूप होगा और कैसा परिसर होगा। हम गये, वह ले गये तो बहुत सुसज्जित तरीके से एक बड़े से परिसर में उन्होंने मन्दिरों की स्थापना की हुई थी और उन्होंने कितने भाव से, कितने लगाव से, कितनी लगन से और कितनी श्रद्धा से उन मन्दिरों का निर्माण किया था। मुझे एक-एक मन्दिर में ले गये और वहां पर हम लोगों ने प्रणाम किया और फिर मैंने बगल में देखा कि एक छोटे-से हाता की तरफ हट कर कुछ क्वाटर बने हुए थे तो उन्होंने कहा कि मैं यहां पर रहता हूं। उनका पूरा ध्यान मन्दिर में था और उन्होंने वहां पर एक छोटी-सी दो कमरे की कुटी-सी बनाकर उसका निर्माण किया था। मुझे महसूस हुआ कि यह व्यक्ति वाकई में कितने समर्पित भाव से, अपने लिये बड़ा घर बनाये मन्दिर बना देते तो सामान्य लगता है, उन्होंने उतनी राशि मन्दिरों के लिए लगा कर भव्य मन्दिर, साफ-सुथरे, सुसज्जित परिसर और अपने रूकने के लिये छोटी-सी जगह। मुझे महसूस हुआ कि इस व्यक्ति।5. में क्या भाव है।

जैसा कि माननीय मुख्यमंत्री जी कह रहे थे, वह मुझे बार-बार वहां जाने के लिए कहते थे। महादेव में स्वयंभू प्रकट और शिला में उनकी बहुत गहरी आस्था थी। कई बार वहां के चमत्कारिक क्षणों के बारे में बताना। देर रात-रात में वहां पर जाकर पूजा-अर्चना करना। वहां की चित्र लाकर दिखाना। वहां के शिवलिंग के रंग बताना। कैसी पूजा-अर्चना। एक गहरे भाव से वह व्यक्ति इन विचारों से भी जुड़े हुए थे और उनके मन की बात पूरा करने के लिए एक ऐसा संयोग आया कि मैं भी वहां उपस्थित हो सका और मैंने उस दिन भी देखा कि उनकी भावना कैसे वहां लीन थी। उनके आव-भाव पूरी तरह से वहीं लीन थे। नाग देवता प्रकट होते हैं, मुझे वहां पर ले गये और ऐसा व्यक्ति एक जनप्रतिनिधि के रूप में भी काम करता था। ये उनके बुनियादी विचार थे और तब यह संभव था।

हम लोग कल ही उनके क्षेत्र में चुनाव प्रचार के समय गये तो जिस नदी में ब्रिज नहीं बन रहा था, पुल नहीं बन रहा था और हम लोग रात भर उसकी चर्चा कर रहे थे कि कैसे होगा? क्योंकि उसकी स्वीकृति वैसे नहीं मिलेगी। हम जल में ही बैठे रहेंगे। हम लोग चुनाव के पहले भी गये थे तो उस पुल को और उस जगह को देख कर आये थे। आज जब वह नहीं रहें तो हमें वहां पर जाकर उस ब्रिज को देख कर आने का अवसर मिला। उन्होंने एक भव्य, बड़े और ऊंचे ब्रिज का निर्माण करके उस क्षेत्र को जोड़ा। ऐसे अनेकों कार्यों में वह हमेशा लगे रहते थे। जब भी बात होती थी तो बड़े भैय्या, वह करना है, वह नहीं हो पाया है, यह करना है, यहां लोगों को यह दिक्कत है, वहां लोगों को यह दिक्कत है। ऐसे जन प्रतिनिधि को हम लोगों ने खोया। हम लोगों ने बहुआयामी गुणों के छोटे भाई को उपाध्यक्ष के रूप में भी देखा। जिसका पुन: उल्लेख हुआ। मुझे भी उम्मीद नहीं थी कि वह उस क्षमता से आसंदी का संचालन कर पाएंगे लेकिन उनके अंदर की जो मजबूती थी, वह उस दरिमयान दिखी और अच्छे तरीके से कंट्रोल करना कि किसी की भावना को ठेस भी न लगे, लेकिन जब कहने की जरूरत हो तो कह कर भी उतने समय तक सदन को चलाना, उनके गुणों का एक और मौका देखने को हम लोगों को मिला था। आज हमारे बीच में वह नहीं रहे हैं, उनके परिवार को, उनकी पत्नी को, बच्चों को, समस्त उनके साथ जुड़े हुये लोगों को, क्षेत्र को, एक बहुत बड़ा आदिवासी नेता, जन नेता, क्षेत्र का नेता, प्रदेश का नेता, हमने खो दिया है। उनकी आतमा को शांति मिले।

जैसा कि मैंने बताया दीपक भाई और मैं साथ ही विधायक बने । अविभाजित सरगुजा के बाद में ये जिले अलग हुये, कोरिया जिले से वे विधायक बनकर आये थे, अच्छे वक्ता के रूप में, गुणवत्तापूर्ण बात करने वाले जनप्रतिनिधि के रूप में, हम लोगों ने उनको सदन में भाग लेते हुये देखा और क्षेत्र में भी सदैव संपर्क भी करते थे, बात भी करते थे, काम भी करने की सदैव चेष्टा करते रहते थे, ऐसे साथी को हमने खोया । उनकी भी आत्मा को शांति मिले । उनके परिवार को संबल मिले । धन्यवाद ।

■अध्यक्ष महोदय :- लखमा जी ।

वाणिज्यिक कर (आबकारी) मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे बस्तर के आदिवासियों के मसीहा और भानुप्रतापपुर के विधायक स्व. श्री मनोज मंडावी वर्ष 1998 में वह भी चुनाव लड़े थे और मैं भी पहली बार चुनाव लड़ा था । मुझे राजनीति में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग करने में उनका बह्त योगदान रहा है । जब हम 1998 में चुनाव लड़ रहे थे तो मोटरसायकल में मेरे

गांव नागारास गये थे । उन्होंने कहा था कि हम दिल्ली का चुनाव लड़ते हैं, दिल्ली चलों । मैंने स्व. श्री मनोज मंडावी को मना किया । मैंने कहा कि टिकट देंगे तो लड़ेंगे, मैं दिल्ली नहीं जाऊंगा । पूरे दिन उन्होंने मुझे इस बात के लिये आग्रह किया । चाहे कलेक्टर से बात करनी हो, चाहे मुख्यमंत्री से बात करनी हो, जब पहली सरकार थी तो उसमें मंत्री थे, वर्ष 1998 से लेकर 2013 और 2018 में कांग्रेस पार्टी के टिकट से और कांग्रेस पार्टी के लिये बस्तर में जब कांग्रेस का चुनाव लड़ना हो, चाहे कॉलेज का आंदोलन करना हो, बस्तर के बारे में बहुत दमदारी से बात उठाने वाला व्यक्ति हमारे बीच में नहीं है । अभी हमारे सदन के नेता माननीय बघेल साहब, नेता प्रतिपक्ष और टी.एस.बाबा ने जो बताया कि बहुत धार्मिक प्रवृत्ति के थे, पंडित लोग उसके पीछे कम है । मंदिर में पूजा करना हो, देवगुड़ी बनाना हो, घोटुल बनाना हो, सुदूर अंचल कोड़ेकुर्सी जैसे क्षेत्र में उस समय नक्सलाईट थे, थाना को तोड़ दिये थे, उन्होंने अपने जान को जोखिम में डालकर रात भर जब तक कलेक्टर नहीं आयेगा, मैं यहां से नहीं उँठूंगा, करके धरने पर बैठा रहा । जब कलेक्टर कांकेर से गया, यह पुल बनेगा, उस समय मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी थे, उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री से मेरी बात हुई है, आश्वासन मिलने पर ही धरने से उठा । इस तरह से लड़ने वाले व्यक्ति का चले जाना बस्तर के लिये बहुत बड़ी क्षति है । उसकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकेगी । भगवान से मेरी यही विनती है कि उसके परिवार को सुरक्षित रखे और उन्हें सदन का आर्शावाद मिले।

स्व. श्री दीपक पटेल, हमारे विधायक थे । नये विधायक होने के बावजूद सदन में अपनी बात बहुत दमदारी से रखते थे, आरंभिक विषयों पर भी एक-एक घण्टे बोलते थे । ऐसा व्यक्ति हमारे बीच में नहीं है । हमने जो दोनों राजनेता को खोये हैं, खासकर मनोज मंडावी के लिये जो हमारे बस्तर में छात्र राजनीति करते हुये मंत्री से लेकर विधानसभा तक पहुंचे । इस दु:ख की घड़ी में भगवान से विनती है कि उसे अपने चरणों में जगह दे और उनके बच्चों को भी आर्शीवाद प्रदान करें । आपने बोलने का मौका दिया, धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- अमरजीत जी ।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं स्वर्गीय मनोज सिंह मंडावी जी के निधन पर अपनी श्रद्धांजिल देने के लिये खड़ा हुआ हूं। स्वर्गीय मंडावी जी के रूप में हम लोगों ने एक बड़ा नेता, आदिवासियों में खास पैठ रखने वाले माननीय मंडावी जी को खो दिया है। माननीय मंडावी जी और मेरा, हम लोगों का राजनीति में एक साथ आना हुआ था। हम लोग एक ही नर्सरी से निकले थे और बहुत अंतरंगता थी। वह बहुत सारे मामले में जो बात करते थे और ऐसी-ऐसी बातें बोल देते थे जिसको हम भी बर्दाश्त करते थे और हमारी बातों को वह भी सहन कर जाते थे। राजनीति में भी कई बार उतार-चढ़ाव और ऐसी परिस्थिति निर्मित हुई, उस समय उनकी दृढ़ता देखने को मिलती थी। प्रारंभिक तौर पर जब जोगी जी मुख्यमंत्री बने, उस दौर में हमने उनको देखा कि लोग किस प्रकार से किसी नेता

के प्रति समर्पित भाव से रहते हैं और उन्होंने बहुत सारी लड़ाई उनके साथ लड़ी और उनके मंत्रिमण्डल में वह मंत्री भी बने और मंत्री बनने के बाद भी जब चुनाव हुआ और वह चुनाव में हारे भी, हमने ऐसे कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। लेकिन उनका आदिवासी वर्ग के लिये जो समर्पित भाव था, खासतौर पर बस्तर क्षेत्र के लिये, वह हमेशा हम लोगों के मानस पटल पर रहेगा। एक अच्छा जन नेता, आदिवासियों का बड़ा चेहरा था, उनको हम लोगों ने खो दिया, मैं उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय दीपक पटेल जी भी हम लोगों के साथ सदन में काम किये थे, उनकी भी सभी मामलों में बहुत अच्छी पकड़ थी और वह जब बोलते थे तो उनकी सभी चीजों में पारखी पकड़ थी और लगता नहीं था कि नये विधायक बोल रहे हैं। मैं उनको भी अपने दिल से बहुत श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं। ईश्वर हमारे दोनों साथियों को अपने श्री चरणों में स्थान दें, ओम् शांति।

श्रम मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आदरणीय मनोज मंडावी जी एक योग्य युवा थे, उनमें अपार संभावनाएं थीं और हम लोगों ने सामाजिक क्षेत्र में और राजनीतिक जीवन की शुरूआत लगभग एक साथ शुरू की थी, वह मेरे मित्र भी थे। जब उनकी शादी हुई तो उन्होंने मुझे निमंत्रण दिया था और मैं उनकी शादी में गया था और हम लोग सब साथ मिलकर मध्यप्रदेश की राजनीति में काम करते थे। जब कोई कार्यक्रम होता था या अन्य बातें होती थी तो वह मुझे कई बार अपने गांव बुलाते थे, लेकिन उनकी शादी के बाद कभी उनके यहां जाना नहीं हुआ। प्रदेश की राजनीति में आदिवासी वर्गों के लिये और गरीब लोगों के लिये उनमें काम करने की एक ललक थी और उनके प्रति उनका उत्साह हमेशा बना रहता था। निश्चित रूप से उनका असमय जाना हम सब के लिये दुःख का कारण है और भगवान उनकी आत्मा को शांति दें। मैं पहली बार उनकी शादी में उनके गांव गया था और उसके बाद उनके निधन में उनके अंत्येष्टि में गया था। मुझे बड़ा दुख हुआ कि वह मुझे बुलाते थे लेकिन मैं उनके यहां नहीं जा पाया। लेकिन यदि हम सब मिलकर उनके कामों को आगे बढ़ायेंगे तो निश्चित रूप से वही उनके लिये सच्ची श्रद्धांजिल होगी।

भाई दीपक पटेल जी, जब हम लोग विपक्ष में हुआ करते थे तो वह यहां सत्ता पक्ष में बैठा करते थे और हर चीज में बेबाकी से अपनी बात रखते थे। सरकार के खिलाफ भी बोलना होता था तो वह कभी हिचकते नहीं थे और लोगों की बात को सदन में रखते थे, मैं उन दोनों को अपनी ओर से नम श्रद्धांजिल अर्पित करता हूं।

डॉ. विनय जायसवाल (मनेन्द्रगढ़) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हम माननीय मनोज सिंह मंडावी जी, जो हमारे प्रखर आदिवासी नेता थे और विधान सभा के उपाध्यक्ष के रूप में हम सभी नये सदस्यों को उनका बह्त मार्गदर्शन मिलता था, मैं उनकी मृत्यु पर सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, दीपक पटेल जी, जो मेरे ही विधान सभा क्षेत्र से परिसीमन के बाद मनेन्द्रगढ़ के प्रथम विधायक के रूप में निर्वाचित हुए थे। उनकी एक बात हमेशा याद आती है क्योंकि वह चिरमरी के बड़ी बाजार में रहते थे और वहीं मेरी नानी का घर था तो बचपन में लोटा लेकर हम लोग उनके पास दूध लेने के लिए जाते थे। उनका दूध का व्यापार था। दूध बेचने से लेकर छत्तीसगढ़ सदन के सर्वश्रेष्ठ विधायक चुनने तक का जो माननीय दीपक पटेल जी का सफर था। माननीय अध्यक्ष महोदय, एक बात और याद आती है कि अभी एक बार बीच में मुलाकात हुई थी तो राजनीति में हम लोग प्राय: अपने विरष्ठों के लिए भईया शब्द का उपयोग करते हैं तो जब मैंने उनको भईया कहकर उद्बोधित किया, उन्होंने कहा कि हम आपके भईया नहीं हैं, हम आपके मामा हैं। उनका इतना लगाव था, वह इतने सरल और सहज थे। जो दीपक पटेल जी का निधन हुआ, मैं उनको भी बहुत ही भावभिनी श्रद्धांजिल अर्पित करता हूँ। मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

डॉ. रमन सिंह (राजनांदगांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, भानुप्रतापपुर के विधायक और विधान सभा के उपाध्यक्ष मनोज मंडावी जी के आकिस्मिक निधन से मैं भारतीय जनता पार्टी के पूरे दल की ओर से उन्हें श्रद्धांजिल अर्पित करता हूँ। एक विरष्ठ नेता के रूप में न केवल बस्तर बिल्क पूरा छत्तीसगढ़ और संयुक्त मध्यप्रदेश में उनकी एक महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने विधान सभा के उपाध्यक्ष के दायित्व का बहुत बेहतर तरीके से निर्वहन किया। मंत्री की हैसियत से छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण के बाद पहले मंत्रि-मण्डल में गृह राज्य मंत्री के पद में आसीन रहे। मैं अपनी विनम्न श्रद्धांजिल अर्पित करता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, दीपक पटेल जी मनेन्द्रगढ़ के पूर्व विधायक और एक ऐसा व्यक्तित्व जो संघर्ष से आगे बढ़ा था। किसान होने के बाद मजदूरों के बीच हमेशा संघर्ष के लिए तैयार रहते थे। वह एक प्रखर वक्ता थे। विधान सभा में उनकी उपस्थिति और विषय रखने का तरीका इतना प्रभावशाली था कि उन्हें विधान सभा ने श्रेष्ठ विधायक के रूप में सम्मानित किया और वह हमेशा विधान सभा की अलग-अलग समितियों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। वह सिक्रय व्यक्ति थे। युवा मोर्चा के अध्यक्ष, जिला अध्यक्ष से लेकर प्रदेश के भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष रहे। उन्हें ऐसे विभिन्न दायित्वों पर काम करने का अवसर मिला। मैं उन्हें भी अपनी विनम्न श्रद्धांजित अर्पित करता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री मनोज सिंह मंडावी से मेरे कई तरह के संबंध थे। वह मेरे निर्वाचन क्षेत्र में बहुत आते थे। वर्षों से आते थे। जब एक बार आसंदी में बैठे थे तो उन्होंने मेरे निक नेम से कहा कि अरे यार बैठ जाना। बाद में वह कक्ष में बोले कि आसंदी से आपका नाम और आपको यार-यार बोल दिया, उसको आप अन्यथा मत लेना। उस तरह की बहुत सारी

व्यक्तिगत चीजें थीं। वह सबको बहुत अच्छे से मंदिर निर्माण के लिए बताते थे। मैं देखने भी गया था। अभी दोबारा जिस दिन उनके कार्यक्रम में मुख्यमंत्री जी गये थे, मैं वहीं था। उनको सनातन धर्म के प्रति आस्था और धार्मिक कामों में रूचि विरासत से प्राप्त हुई थी राजनीतिक कारणों से नहीं, उनके पिता जी भी भारतीय जनसंघ से विधायक थे। वह कहा करते थे कि किसी स्थानीय घटनाओं के कारण कांग्रेस पार्टी में आ गया। उनकी बेबाकी का अंदाज ऐसा था कि उन्हें कांग्रेस पार्टी छोड़नी पड़ी तो उन्होंने कांग्रेस पार्टी भी छोड़ी। वह निर्दलीय चुनाव लड़े। अभी जब वह उपाध्यक्ष बने उससे पहले उन्होंने एक साक्षात्कार दिया था। मैंने, उसमें लिखा भी था कि मैं बेबाक हूँ इसलिए मुझे मंत्री नहीं बनाया गया। उनकी बेबाकी के और उदाहरण थे। नदी का निर्माण हो, चाहे धर्म के प्रति आस्था हो, चाहे कुछ भी हो। वह इस बात को स्वीकारते थे कि मैं स्थानीय कारणों से ही कांग्रेस पार्टी में आ गया, नहीं तो मैं अपने पिताजी का बहुत आदर सम्मान करता हूँ। कुल मिलाकर मैं जितने लोगों से मिला। दल से असहमित हो सकती है । उतनी सरलता, सहजता और स्वाभाविकता वाला आदमी खास तौर पर आदिवासी समाज में मैंने व्यक्तिगत तौर पर नहीं देखा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, दीपक पटेल जी हमारे मित्र थे, हमारे दल के विधायक थे। वह वैचारिक रूप से बहुत संपन्न आदमी थे। वह विधानसभा में जैसे भी बोलते थे। हमारा पार्टी में जो निरंतर प्रशिक्षण होता है, उस प्रशिक्षण प्रकोष्ठ के वह चेयरमेन थे। हमारी जो वैचारिक निष्ठायें हैं, उन पर वह सबसे गंभीर वक्ता छत्तीसगढ़ में हमारी ओर से थे। उनका मार्गदर्शन हम लोगों को पार्टी के विभिन्न शिविरों में, चिंतनों में अलग-अलग तरीके से सदैव प्राप्त होता था। दल की सीमाओं से परे उठकर हमने अपने दोनों मित्रों को, लोकसेवकों को खोया है जिन्होंने एक लंबी पारी सार्वजनिक जीवन में खेली है, लोगों की ईमानदारी से सेवा की है। ऐसी दिवंगत आत्माओं के प्रति मैं विनम्रता से श्रद्धांजिल व्यक्त करता हूं।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा (जैजेपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री मनोज सिंह मंडावी जी जो इस सत्र के पहले यहां विधानसभा के उपाध्यक्ष थे, आकस्मिक रूप से उनका निधन हुआ। दो सत्रों तक हम लोग यहां साथ रहे। वह बहुत मिलनसार, मृदुभाषी व्यक्ति थे और उनका सदैव मार्गदर्शन भी नये विधायकों को मिलता रहा। निश्चित रूप से राजनीति में उनकी कमी पूरे छत्तीसगढ़ के लिए महसूस की जाएगी। माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री दीपक पटेल जी, जब मैं विधानसभा आया तो उसके पहले विधायक थे। मैं अपने दल की तरफ से स्वर्गीय श्री मनोज सिंह मंडावी जी, स्वर्गीय श्री दीपक पटेल जी को श्रद्धास्मन अर्पित करता हूं।

श्री मोहन मरकाम (कोंडागांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे वरिष्ठ आदिवासी नेता और विधानसभा उपाध्यक्ष का आकस्मिक रूप से जाना हम सबके लिए अपूरणीय क्षति है। माननीय अध्यक्ष महोदय, 90 के दशक में माननीय मनोज सिंह मंडावी जी SC/ST student union के अगुवा होते थे। वह

अपने हक और अधिकारों के लिए, आदिवासी समाज की समस्याओं के लिए लगातार लड़ते थे। मैं भी 1991 में कांकेर कालेज का student रहा हूं और वह लॉ में थे। वह हमेशा अपने अधिकारों के लिए लड़ते थे। छात्रसंघ के जितने भी च्नाव होते थे, खासकर hostel panel हमेशा आगे रहता था और हम लोग हर चुनाव में जीतते थे। कहीं न कहीं उनका आकस्मिक रूप से जाना हमारे दल के साथ- साथ, आदिवासी समाज के लिए अपूरणीय क्षति हुई है। वह 90 के दशक में राजनीति में प्रवेश किये, उस दौर में मध्यप्रदेश युवक कांग्रेस के उपाध्यक्ष के पदीय दायित्वों का भी निर्वहन किया। जैसा कि पूर्ववक्ताओं ने विस्तार से बताया, वह हमेशा अपने हक और अधिकारों के लिए लड़ते थे। खासकर आदिवासी समाज की ज्वलंत समस्याओं के लिए शासन-प्रशासन से लड़ते थे। कहीं न कहीं उनका आकस्मिक रूप से जाना अपूरणीय क्षति है। मैं भी कांकेर कॉलेज से पास ऑउट हूं और माननीय मनोज सिंह मंडावी जी भी लॉ से कांकेर कॉलेज से पास ऑउट हैं। कहीं न कहीं हममें बहुत अंतरंग संबंध थे। वह हमेशा मुझे छोटू कहकर पुकारते थे। राजनीति में आने के बाद भी छोटू कहकर पुकारते थे। कहीं न कहीं उनका स्नेह, प्यार मुझे मिलता रहा है। जब प्रदेश अध्यक्ष का इंटरव्यू हुआ था। हम दोनों लोग बस्तर से थे। जब माननीय राह्ल गांधी जी के सामने हम लोग इंटरव्यू के लिए गये तो वह कहते थे कि छोटू चाहे आप अध्यक्ष बनो या मैं बनूं हम लोग बस्तर से हैं, हम सब सब लोग मिलजुलकर अच्छे से संगठन को मजबूती प्रदान करेंगे। कहीं न कहीं उनका आकस्मिक रूप से जाना हमारे समाज के लिए बह्त बड़ी क्षति है। स्वर्गीय मनोज सिंह मंडावी जी हमारे प्रदेश के वरिष्ठ आदिवासी नेता थे। वह आदिवासी समाज की उन्नति और अपने क्षेत्र के विकास के लिए सदैव प्रयासरत रहे। वह आदिवासियों की समस्याओं को विधान सभा में प्रभावी ढंग से रखते रहे। दुनिया उसी के कदमों में झुकती है जो पहचान छोड़ जाता है। जैसे शेर जिस जगह से गुजरे अपने निशान छोड़ जाता है। स्वर्गीय मनोज सिंह मंडावी जी हमारे समाज के लिए अमिट निशान छोड़कर चले गये। कहीं न कहीं उनकी कमी हमेशा समाज को और अपने दल को खलते रहेगी। उसके साथ-साथ स्वर्गीय श्री दीपक पटेल जी को भी मैं अपने दल की ओर से सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपनी बातों को विराम देता हूँ। ओम शांति।

अध्यक्ष महोदय :- श्री शैलेश पांडे।

श्री शैलेश पांडे (बिलासपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हम इस पवित्र सदन से स्वर्गीय श्री मनोज सिंह मंडावी और स्वर्गीय श्री दीपक पटेल जी को श्रद्धांजिल दे रहे हैं। श्री मनोज सिंह मंडावी जी से हमारे बहुत ही अच्छे संबंध थे। एक बड़े भाई जैसा हमेशा उनका आशीर्वाद और उनकी छाया मिली। राजनीति में आने के बाद मैंने जीवन में दो लोगों को बहुत ज्यादा appreciate किया। एक वह लोग, जिनके बारे में हम सुनते आए हैं, जो आज संसार में नहीं हैं कि वह बहुत दबंग नेता थे। जो बोलते थे, वह करते थे और जब उन्होंने जहां बोल दिया, उन्होंने कर दिया। उनमें एक दबंग नेता की जो छिव होती थी, जो जनता के लिए समर्पित रहते थे और दूसरा, जो बहुत सरल और सहज नेता होते हैं, जो बहुत

विनम्न होते हैं, यह दो लोग राजनीति में बहुत याद किए जाते हैं। मंडावी साहब बहुत ही दबंग नेता थे और वे जब भी कुछ बोलते थे तो ऐसा लगता था कि उनसे सीखने को मिलता था। उनके किस्से जो हम लोगों ने सुना है। जब वे माननीय मंत्री रहे, जब भी वे बिलासपुर आते रहे, उस दौरान में बहुत ऐसे-ऐसे किस्से हैं, जो हमारे जैसे नये विधायकों को बहुत ज्यादा प्रेरणा देते हैं। हमें उनका बहुत प्यार और आशींवाद मिला। मैं उनके निवास भी गया था। वहां उनका इतना भव्य मंदिर देखा कि जितना बड़ा उनका घर नहीं है, उससे कई गुना ज्यादा बड़ा उन्होंने भव्य मंदिर बनवाया है। यह कोई महान आत्मा ही कर सकती थी। मैं उनके दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ और साथ ही स्वर्गीय श्री दीपक पटेल जी को भी विनम्न श्रद्धांजिल अर्पित करता हूँ। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- मैं सदन की ओर से शोकाकुल परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूँ। दिवंगतों के सम्मान में अब सदन कुछ देर के लिए मौन धारण करेगा।

(सदन द्वारा खड़े होकर दो मिनट मौन धारण किया गया)

अध्यक्ष महोदय :- दिवंगतों के सम्मान में सभा की कार्यवाही शुक्रवार, दिनांक 02 दिसंबर, 2022 को पूर्वाहन 11.00 बजे दिन तक के लिए स्थगित।

(पूर्वाहन 11 बजकर 44 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही शुक्रवार, दिनांक 02 दिसंबर, 2022 (अग्रहायण 11, शक सम्वत् 1944) के पूर्वाहन 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई)

रायपुर (छतीसगढ़) दिनांक 01 दिसंबर, 2022 दिनेश शर्मा सचिव छत्तीसगढ़ विधान सभा